Toppersnotes
Unleash the topper in you

2nd – ग्रेड

वरिष्ठ अध्यापक

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)

हिन्दी, पेपर II

भाग – 3

साहित्य II,भाषा उद्भव एवं विकास
(स्नातक स्तर)

SIERRA INNOVATIONS

क्र.सं.	अध्याय हिन्दी	पृष्ठ सं.
1.	रीतिकाल	1
2.	आधुनिक काल	50
3.	आधुनिक काल गद्य	87
4.	हिन्दी साहित्य के प्रमुख एकांकीकार व उनकी रचनाएँ	101
5.	हिन्दी भाषा के लिए संवैधानिक प्रावधान	134

आधुनिक काल (1850 ई. से अब तक)

(1843 ई. से अब तक (माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, हिन्दी–कक्षा–11, 12) पेज – 98)

- हिन्दी साहित्य का चौथा चरण आधुनिक काल के नाम से जाना जाता है।
- आधुनिक काल की आरम्भिक सीमा के संबंध में विद्वानों के तीन मत हैं –
- **1850 ई. से आरम्भ**
  - ➢ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जन्म वर्ष होने के कारण मान्य।
- **1857 ई. से आरम्भ**
  - ➢ भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का वर्ष होने के कारण।
- **1868 ई. से आरम्भ**
  - ➢ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की सर्वप्रथम पत्रिका "कविवचन सुधा" का प्रकाशन वर्ष होने के कारण मान्य।

हिन्दी साहित्य का संक्रान्ति काल

- आषाढ़ शुक्ल के अनुसार आधुनिक काल का आरम्भ 1843 ई. (1900 विक्रम संवत्) से माना गया है तथा उपर्युक्त तथ्यों के अनुसार आधुनिक काल का आरम्भ 1868 ई. भी माना जा रहा है।
- इस 25 वर्ष की अवधि (1843 ई. से 1868 ई.) के संबंध में विद्वानों का एकमत नहीं होने के कारण इस अवधि को हिन्दी साहित्य का संक्रान्ति काल कहा जाता है।

विशेष तथ्य

1. रीतिकाल में जो हिन्दी साहित्य केवल दरबारी संस्कृति का विषय बनकर रह गया था, इस काल में आकर वह पुनः आम जनता का साहित्य बनने लगा था।
2. भक्तिकाल के बाद हिन्दी का सर्वाधिक विकास आधुनिक काल में ही हुआ है, जिसके कारण आधुनिक काल को "हिन्दी साहित्य का दूसरा स्वर्णकाल" कहा जाता है।

आधुनिक काल का उपविभाजन

शोधकर्ताओं के द्वारा आधुनिक काल को 6 उपभागों में विभाजित किया हैं –

1. पुनर्जागरण काल (भारतेन्दु युग) – 1850 ई. से 1900 ई. तक
2. जागरण सुधार काल (द्विवेदी युग) – 1900 ई. से 1920 ई. तक
3. छायावाद काल (प्रसाद, पंत, निराला युग) – 1920 ई. से 1936 ई. तक
4. प्रगतिवाद काल (साम्यवादी युग) – 1936 ई. से 1943 ई. तक
5. प्रयोगवाद काल (तार सप्तक, अज्ञेय युग) – 1943 ई. से 1953 ई. तक
6. नव लेखन काल (नई कविता काल) – 1953 ई. से अब तक

डॉ. बच्चन सिंह ने स्वरचित हिन्दी साहित्य को दूसरे इतिहास में आधुनिक काल को निम्नानुसार तीन भागों में उपविभाजित किया –

1. नवजागरण काल – 1857 ई. से 1920 ई. तक
2. स्वच्छन्दता काल – 1920 ई. से 1938 ई. तक
3. उत्तर स्वच्छन्दता काल – 1938 ई. से अब तक

भारतेन्दु युग (1850 ई. – 1900 ई. तक)

- इस युग का नामकरण हिन्दी साहित्य के अग्रदूत भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाम पर किया गया है।
- रीतिकाल का हिन्दी साहित्य केवल दरबारी संस्कृति का काव्य बनकर रह गया था, लेकिन इस युग में आकर वह पुनः आम जनता का साहित्य बनने लगा, जिसके कारण डॉ. नागेन्द्र ने इस युग को पुनर्जागरण कहकर पुकारा है।
- डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त ने इस युग को आदर्शवादी, रीतिमुक्तक परम्परा काव्य कहकर पुकारा है।

- इस युग में आकर राष्ट्रभक्ति से संबंधित साहित्य लिखा जाने लगा।
- इस युग में पद्मकाव्य में तो ब्रज भाषा का प्रयोग किया जाता था, लेकिन गद्य में खड़ी बोली का प्रयोग होने लगा था।

खड़ी बोली

- मुगल शासन काल के दौरान हिन्दी भाषा में संस्कृत की तत्सम शब्दावली का अधिक प्रयोग किया जाने लगा। इस तत्सम शब्द प्रधान हिन्दी भाषा को ही खड़ी बोली के नाम से पुकारा जाता है।
- यह बोली दिल्ली, हरियाणा, पंजाब के क्षेत्र में अधिक बोली जाती है।
- इस क्षेत्र को प्राचीनकाल में 'कुरूप्रदेश' के नाम से पुकारा जाता था।
- इस बोली के लिए खड़ी बोली शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग मुंशी लल्लूलाल ने स्वरचित 'प्रेमसागर' रचना में किया था।
- गिलक्राइस्ट महोदय ने खड़ी बोली को 'टकसाली भाषा' कहकर पुकारा था।
- डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी ने खड़ी बोली को 'जनपदीय हिन्दुस्तानी' कहकर संबोधित किया था।
- हिन्दी भाषा के सर्वप्रथम समाचार पर 'उदन्त मार्तण्ड' में खड़ी बोली को 'मध्यदेशीय भाषा' के नाम से पुकारा गया था।
- हिन्दी भाषा में खड़ी बोली का प्रयोग करने वाले सर्वप्रथम प्रतिष्ठित कवि – अमीर खुसरो।
- उत्तर भारत में खड़ी बोली का प्रचार–प्रसार करने वाले प्रथम विद्वान – गंग कवि थे।
  नोट – इनकी (गंग कवि) चन्द छन्द बरनन की महिमा रचना में खड़ी बोली का प्रयोग हुआ है।
- दक्षिण भारत में खड़ी बोली का प्रचार–प्रसार करने वाले प्रथम विद्वान–"मुल्ला वजही" थे।
  नोट – इनकी 'सबरस' एवं 'कुतुब मुश्तरी' रचनाओं में खड़ी बोली का प्रयोग हुआ है।
- आषाढ़ शुक्ल के अनुसार शुद्ध एवं परिमार्जित खड़ी बोली की सर्वप्रथम रचना – भाषा योग वशिष्ठ (रामप्रसाद निरंजनी – 1741 ई.)।
- आषाढ़ शुक्ल के अनुसार शुद्ध एवं परिमार्जित खड़ी बोली की द्वितीय रचना – पद्मपुराण (दौलतराम – 1771 ई.)।
- आषाढ़ शुक्ल के अनुसार आधुनिक खड़ी बोली की सर्वप्रथम रचना – एकान्तवासी योगी (श्रीधर पाठक – 1886 ई.)।
- आषाढ़ शुक्ल के अनुसार खड़ी बोली में रचित सर्वप्रथम महाकाव्य – 1914 ई. में प्रिय प्रवास (अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'।
- खड़ी बोली का स्वर्णकाल – छायावाद काल।
- आधुनिक काल में खड़ी बोली का प्रचार–प्रसार करने वाली महत्वपूर्ण संस्था – फोर्ट विलियम कॉलेज–कलकत्ता (1800 ई.)।
- आधुनिक काल में खड़ी बोली का विकास करने वाले चार प्रसिद्ध गद्य लेखक।
  - **फोर्ट विलियम कॉलेज से संबंधित दो लेखक –**
    1. सदल मिश्र – नासिकेतोपाख्यान (चन्द्रवती)
    2. मुंशी लल्लू लाल – (प्रेमसागर)
  - **दो अन्य लेखक –**
    1. मुंशी सदासुखलाल नियाज (सुखसागर)।
    2. सैयद इंशा अल्ला खाँ (रानी केतकी की कहानी (उदयभान चरित))।
- भारतेन्दु युग में पद्यकाव्यों मे भी ब्रज भाषा के स्थान पर खड़ी बोली का प्रयोग करने के लिए '1887' ई. में अयोध्या प्रसाद खत्री के द्वारा स्वरचित खड़ी बोली का पद्य रचना में एक सशक्त आंदोलन शुरू किया था। आगे चलकर 'महावीर प्रसार द्विवेदी' ने भी इस आंदोलन का समर्थन किया व द्विवेदी युग में आकर गद्य व पद्य दोनों में खड़ी बोली का प्रयोग किया जाने लगा।

- जगन्नाथदास रत्नाकर ने इस खड़ी बोली आन्दोलन अथवा खड़ी बोली का समर्थन करने वाले कवियों को ''हठी एवं मूर्ख'' कहकर पुकारा था।

भारतेन्दु युग के प्रमुख कवि

1. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

- जन्म – 1850 ई.
- मृत्यु – 1885 ई.
- जन्म स्थान – काशी/वाराणसी/बनारस
- पिता का नाम – बाबू गोपालचन्द्र गिरिधरदास
- मूल नाम – हरिश्चन्द्र
- उपाधि – भारतेन्दु (भारत + इन्दु = भारत का चन्द्रमा)

नोट – इनको यह उपाधि उस समय के प्रसिद्ध पत्रकारों व साहित्यकारों के द्वारा 1880 ई. में एक सम्मेलन में प्रदान की गयी थी।

संपादित पत्रिकाएँ

1. कवि वचन सुधा (1868 ई.) – मासिक/पाक्षिक/साप्ताहिक
2. हरिश्चन्द्र चन्द्रिका (1873 ई.) – मासिक

   नोट
   - अपने शुरूआती आठ अंकों तक यह पत्रिका हरिश्चन्द्र मैग्जीन के नाम प्रकाशित हुई थी। 9वें अंक में इसका नाम बदलकर हरिश्चन्द्र चन्द्रिका रखा गया था।
   - हिन्दी गद्य का ठीक परिष्कृत रूप सर्वप्रथम इसी पत्रिका में देखने को मिलता है।
   - इसी पत्रिका के प्रकाशन से हिन्दी नये चाल में ढली मानी जाती है। (1873 ई. से)
3. बालाबोधिनी (1874 ई.) मासिक
   - यह पत्रिका स्त्री शिक्षा से संबंधित पत्रिका मानी जाती है।
   - उपर्युक्त तीनों पत्रिकाएँ काशी से प्रकाशित होती थी।

प्रमुख रचनाएँ

- अपने 35 वर्ष के अल्पकालिक जीवन में हरिश्चन्द्र ने हिन्दी साहित्य की लगभग हर विधा पर लेखनी चलायी है। इन्होंने लगभग 175 रचनाएँ लिखी है जिनमें से काव्य रचनाओं की संख्या 70 मानी जाती है।
- **इनकी कुछ प्रसिद्ध रचनाएँ निम्नानुसार हैं –**
  1. प्रेम मालिका
  2. प्रेम सरोवर
  3. प्रेम फुलवारी
  4. प्रेम पच्चासा
  5. प्रेम माधुरी
  6. प्रेम प्रलाप
  7. विजयिनी विजय वैजयंती
  8. प्रेम तरंग
  9. विनय प्रेम पचासा
  10. वर्षा विनोद
  11. फूलों का गुच्छा
  12. बकरी विलाप
  13. दशरथ विलाप
  14. कार्तिक स्नान
  15. वैशाख महात्म्य
  16. तन्मय लीला

17. उत्तरार्द्ध भक्तमाल
18. भक्त सर्वस्व
19. उर्दू का स्यापा
20. भारत भिक्षा
21. गीत गोविंदानंद
22. वेणु गीता

नोट – भारतेन्दु की लगभग सभी काव्य रचनाओं में ब्रज भाषा का प्रयोग हुआ है, परन्तु दशरथ विलाप, फूलों का गुच्छा रचनाओं में खड़ी बोली का प्रयोग हुआ हैं।

अन्य तथ्य

- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र हिन्दी गद्य के जनक माने जाते हैं।
- अपने आरम्भिक काल में इन्होंने 'रसा उपनाम' से कार्य किया हैं।
- हिन्दी साहित्यकारों की समस्याओं का समाधान करने के लिए इन्होंने "कविता वृद्धिनी सभा" नामक एक संस्था की स्थापना की थी।
- हरिश्चन्द्र ने 1873 ई. में 'तदीय समाज' नामक एक नये संप्रदाय की स्थापना की थी।
- भारतेन्दु कविता के क्षेत्र में नवयुग के अग्रदूत थे।
- भारतेन्दु ने "विजयिनी विजय वैजयंती" शीर्षक कविता मिस्त्र में भारतीय सेना की विजय प्राप्ति पर लिखी थी।
- इन्होंने पैरोडी, स्यापा, गाली, लावनी आदि शैलीगत रूपों में कविताएँ लिखी।
- इनकी 'कालचक्र' रचना के अनुसार हिन्दी भाषा 1873 ई. में ही "नये चाल में ढली" मानी जाती है।
- एक कवि होने के साथ एक अच्छे अभिनेता भी थे। हिन्दी साहित्य के सर्वप्रथम अभिनीत नाटक–जानकी मंगल (शीतला प्रसाद त्रिपाठी) में भारतेन्दु ने लक्ष्मण पात्र की भूमिका भी निभायी थी।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार ये केवल नर प्रकृति के कवि माने गये हैं।
- अमीर खुसरो की तरह इन्होंने भी लोगों के मनोरंजन के लिए अनेक पहेलियाँ, मुकरियाँ लिखी हैं।
- मातृभाषा की प्रशंसा करते हुए भारतेन्दु ने लिखा है –

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटे न हिय को सूल।।"

2. बदरीनारायण चौधरी (प्रेमघन)

- जन्म – 1855 ई.
- मृत्यु – 1932 ई.
- जन्म स्थान – मिर्जापुर (उत्तर प्रदेश) ब्राह्मण कुल में

रचनाएँ

1. जीर्ण जनपद
2. आनंद अरुणोदय
3. मयंक महिमा
4. हार्दिक हर्षादर्श
5. वर्षा बिन्दु
6. अलौकिक लीला
7. बृजचंद पंचक
8. लालित्य लहरी
9. पितर प्रताप
10. युगल स्तोत्र
11. होली की नकल
12. मन की मौज
13. सूर्य स्तोत्र

- **आरम्भिक जीवन में अब्र उपनाम से उर्दू भाषा में भी लेखन कार्य किया था।**
- अपने जन्म स्थान मिर्जापुर से इन्होंने निम्न दो पत्र–पत्रिकाओं का संपादन किया था।
  1. आनद कादम्बिनी (मासिक) 1881 ई.
  2. नागरी–नीरद (साप्ताहिक) 1893 ई.
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार बदरीनारायण चौधरी एवं बालकृष्ण भट्ट को हिन्दी समालोचना का जनक भी माना गया हैं।
- बदरी की रचनाओं में 'यति भंग' नामक छंद दोष भी पाया जाता है।
- एक बार विदेश में दादाभाई नौरोजी को अंग्रेजों के द्वारा काला कहकर सम्बोधित किया, इसकी प्रतिक्रिया में बदरीनारायण ने एक "क्षोभपूर्ण कविता" भी लिखी।

3. प्रताप नारायण मिश्र

➢ जन्म – 1856 ई.

➢ मृत्यु – 1894 ई.

➢ जन्म स्थान – बैजेगाँव, जिला–उन्नाव (उत्तर प्रदेश)

रचनाएँ

1. प्रेमपुष्पावली
2. मन की लहर
3. लोकोक्ति शतक
4. तृप्यन्ताम्
5. शृंगार विलास
6. दंगल खण्ड
7. रसखान शतक
8. ब्रेडला स्वागत
9. दीवाने
10. प्रताप लहरी
11. हिन्दी की हिमायत

कविताएँ

1. हर गंगा
2. गो रक्षा
3. बुढ़ापा

नोट

- प्रताप–लहरी इनकी प्रतिनिधि कविताओं का संकलन हैं।
- हिन्दी भाषा के प्रचार–प्रसार के लिए प्रताप ने 1888 ई. में कानपुर से ब्राह्मण नामक मासिक पत्रिका का संपादन शुरू किया।
- अपनी ब्राह्मण पत्रिका का चंदा समय पर प्राप्त नहीं होने के कारण एक बार इनको यह कथन लिखना पड़ा था –

"आठ मास बीते जजमान।
अब तो करो दक्षिणा दान।।"

- **प्रताप ने हिन्दी–हिन्दू–हिन्दुस्तान नामक नारा दिया था।**
- इनकी निबंध रचनाओं से प्रभावित होकर आचार्य शुक्ल ने इनको "हिन्दी का एडीसन" कहा है।
- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार हिन्दी साहित्य सहज चटुल भाषा शैली के पुरस्कर्ता भी माने जाते हैं।
- ये कानपुर की रसिक समाज नामक संस्था के आजीवन सदस्य भी रहे हैं।

4. अम्बिकादत्त व्यास

- ➢ जन्म – 1858 ई.
- ➢ मृत्यु – 1900 ई.
- ➢ जन्म स्थान – मानपुरा माचेड़ी (जयपुर)
- ➢ निवास स्थान – काशी

रचनाएँ

1. पावस पचासा (1886)
2. सुकवि सतसई (1887)
3. कंस वध (अधूरी)
4. हो–हो–होरी (1891)
5. बिहारी विहार
6. गद्य काव्य मीमांसा
7. जटिल वणिक
8. भारत धर्म
9. आश्चर्य वृतान्त
10. शिवराज विजयम् (संस्कृत उपन्यास)

- अम्बिकादत्त ने **पियूष प्रवाह पत्रिका** का संपादन किया।
- अम्बिकादत्त ने हिन्दी एवं संस्कृत दोनों भाषाओं में समान अधिकार के साथ लेखन किया हैं।
- संस्कृत भाषा में रचित "शिवराज विजयम्" उपन्यास के कारण इनको सर्वाधिक प्रसिद्धि प्राप्त हुई हैं।
- बिहारी विहार रचना में इन्होंने बिहारी सतसई के दोहो का **कुण्डलिया छंद में** भाव विस्तार किया हैं।
- इन्होंने मात्र दस वर्ष की आयु में कविता लेखन कार्य शुरू कर दिया था।
- मात्र 12 वर्ष की अल्पायु में "कविता वृद्धिनी सभा" काशी के द्वारा इनको **सुकवि की उपाधि** भी प्रदान कर दी गयी थी।
- ये एक घड़ी (24 मिनट का समय) में लगभग 100 श्लोकों या पद्य की रचना कर देते थे, जिसके कारण इनको घटिका शतक एवं शतावधान के नाम से भी पुकारा जाता है।
- इनकी शिवराज विजयम रचना में बाणभट्ट की कादम्बरी रचना की शैली का अनुकरण किया है जिसके कारण इनको "अभिनव बाण" के नाम से भी जाना जाता है।
- **कंस वध इनकी अधूरी रचना है।** प्रबंधात्मक काव्य श्रेणी की इस रचना में खड़ी बोली का प्रयोग किया गया है और केवल तीन सर्ग ही लिखे गये हैं।

5. बालकृष्ण भट्ट

- ➢ जन्म – 1844 ई.
- ➢ मृत्यु – 1914 ई.

रचनाएँ

1. कलिराज की सभा
2. बाल विवाह
3. चन्द्रसेन रहस्य कथा
4. नूतन ब्रह्मचारी (उपन्यास)
5. सौ अजान एक सुजान (उपन्यास)

नोट – शुक्ल ने बालकृष्ण भट्ट को "हिन्दी का स्टील" कहकर पुकारा है।

- ये भारतेन्दु मण्डल के कवियों में सबसे **वरिष्ठ** कवि थे।
- इन्होंने हिन्दी प्रदीप नामक एक मासिक पत्र एवं प्रेम–पुंज नामक मासिक पत्रिका का संपादन किया था।

- इनकी रचनाओं में मुहावरेदार भाषा शैली का अधिक प्रयोग हुआ हैं।
- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार, ये हिन्दी साहित्य में तीखी एवं झनझना देने वाली भाषा में खरी–खरी सुनाने वाले कवि भी माने जाते हैं।
- **इन्होंने साहित्य को "जन समूह के हृदय का विकास" कहकर पुकारा हैं।**

6. राधाचरण गोस्वामी

- ➢ जन्म – 1858 ई.
- ➢ मृत्यु – 1925 ई.

रचनाएँ

1. नवभक्त माल
2. दामिनी दूतिका
3. इश्क चम्मन
4. शिशिर सुषमा
5. भारत संगीत
6. प्रेम बगीची
7. भमर गीत निपद नादान
8. विधवा विलाप
9. भू भारहरणार्य प्रार्थना

नाटक

1. तन–मन–धन गौंसाई जी के अपर्ण (प्रहसन)
2. बूढ़े मुँह मुँहासे लोग देखे तमासे (प्रहसन)

- ➢ राधाचरण गोस्वामी ने 'नवभक्त माल' नामक टीका लिखी थी।
  - बकरी विलाप (भारतेन्दु)
  - दशरथ विलाप (भारतेन्दु)
  - विधवा विलाप (राधाचरण गोस्वामी)
  - अबला विलाप (महावीर प्रसाद द्विवेदी)

विशेष – अम्बिकादत्त व्यास की तरह इन्होंने भी हिन्दी एवं संस्कृत दोनों में समान अधिकार के साथ लेखन कार्य किया हैं।

- ➢ **राधाचरण गोस्वामी ने 1883 ई. में वृन्दावन से भारतेन्दु नामक एक मासिक पत्र का संपादन किया था।**

7. ठाकुर जगमोहन

- ➢ जन्म – 1857 ई.
- ➢ मृत्यु – 1899 ई.

रचनाएँ

1. प्रेमसंपत्ति लता (1885)
2. श्यामालता (1885)
3. श्यामा सरोजिनी (1886)
4. देवयानी (1886)
5. मेघदूत
6. ऋतुसंहार
7. श्यामा स्वप्न

विशेष

- ये मध्य प्रदेश की विजयराघवगढ़ रियासत के राजकुमार थे।
- इनकी मेघदूत एवं ऋतुसंहार रचनाओं में संस्कृत के कालिदास द्वारा रचित रचनाओं का हिन्दी अनुवाद किया गया है।
- आचार्य शुक्ल के अनुसार इन्होंने संस्कृत के महर्षि वाल्मीकि का अनुसरण करते हुए प्रकृति का सूक्ष्म चित्रण किया हैं।

8. मुंशी लल्लू लाल

- जन्म – 1763 ई.
- मृत्यु – 1825 ई.

रचनाएँ

1. प्रेमसागर
2. सिंहासन बत्तीसी
3. बैताल पच्चीसी
4. लालचन्द्रिका
5. माधोनल
6. माधव विलास
7. शंकुतला नाटक
8. सभा विलास
9. ब्रज भाषा व्याकरण

विशेष

- इनकी रचनाओं में उर्दू, खड़ी बोली, ब्रज भाषा तीनों का सम्मिलित प्रयोग किया गया है।
- प्रेमसागर इनकी सर्वाधिक प्रसिद्ध रचना है। इस रचना में श्रीमदभागवत पुराण के दशम् स्कन्द का कथानक लिखा गया हैं।
- इनकी लालचन्द्रिका रचना बिहारी सतसई की टीका मानी जाती हैं।
- अपनी पुस्तकों के प्रकाशन के लिए इन्होंने "संस्कृत प्रेस" नाम एक निजी मुद्रणालय भी स्थापित किया था।

9. सदल मिश्र

- जन्म – 1768 ई.
- मृत्यु – 1848 ई.

रचनाएँ

1. नासिकेतोपाख्यान (चन्द्रावती – 1803 ई.)
2. रामचरित्र – 1805 ई.

विशेष

- इनकी नासिकेतोपाख्यान रचना "कठोपनिषद्'' के ''यम नचिकेता संवाद'' पर आधारित रचना हैं। इस रचना में नचिकेता को ही नासिकेत कहा गया हैं।
- यम नचिकेता संवाद पर अन्य रचना – आत्मजयी (कुंवर नारायण)
- इनकी रामचरित्र रचना में भगवान राम की कथा का वर्णन है। रामचरितमानस की तरह इस रचना को भी सात काण्डों में विभाजित किया गया हैं।

10. सदासुखलाल ''नियाज''

- जन्म – 1746 ई.
- मृत्यु – 1824 ई.

रचनाएँ

1. सुखसागर
2. मुतंखबुतवारिख (उर्दू भाषा)

विशेष

- सुखसागर इनकी सर्वाधिक प्रसिद्ध रचना हैं। यह रचना विष्णु पुराण के कथानक पर आधारित मानी जाती हैं।
- अपनी रचनाओं में इन्होंने कठिन भाषा शैली का प्रयोग किया है, जिसके कारण **शुक्ल** ने इनकी भाषा को ''**पण्डिताउपन**'' की भाषा कहकर पुकारा हैं।
- **इन्होंने उर्दू भाषा में "निसार" उपनाम से लेखन कार्य किया है।**

11. सैयद इंशा अल्ला खाँ

- जन्म – 1756 ई.
- मृत्यु – 1817 ई.
- रानी केतकी की कहानी (उदयभान चरित – 1803 ई.)
- **विशेष –** इन्होंने अपनी रचनाओं में शुद्ध हिन्दी (हिन्दवी) भाषा का प्रयोग करने का प्रयास किया था।
- ये अपनी भाषा को निम्न तीन प्रकार की भाषाओं को/बोलियों को मुक्त रखना चाहते थे।
  1. बाहर की बोली – अरबी, फारसी, तुर्की
  2. गँवारी बोली – ब्रजभाषा
  3. भाखापन – संस्कृत के तत्सम शब्दों का प्रयोग
- आचार्य शुक्ल के अनुसार ये हिन्दी के आरम्भिक चार गद्य लेखकों में रंगीन एवं चुलबुली भाषा का प्रयोग करने वाले कवि थे।
- आचार्य शुक्ल के अनुसार ये चटकिली, मटकिली, मुहावरेदार भाषा शैली का प्रयोग करने वाले कवि भी माने जाते है।

भारतेन्दु काल के अन्य कवि

नवनीत चतुर्वेदी (1868 –1919 ई.)

- रचना – कुब्जा पचीसी

गोविंद गिल्लाभाई

- श्रृंगार सरोजिनी
- पावस पयोनिधि
- राधामुखी षोडसी
- षड्ऋतु
- नीति विनोद

दिवाकर भट्ट

- नखशिख (1884)
- नवोढारत्न (1888)

राधाकृष्ण वर्मा 'बलवीर'

- बलवीर पचासा

राजेश्वरी प्रसाद सिंह "प्यारे"

- प्यारे प्रमोद

गुलाब सिंह

- प्रेम सतसई

कृष्णदेवशरण सिंह 'गोप'

- प्रेम संदेशा

दुर्गादत्त व्यास

- अधमोद्धारक शतक

द्विवेदी युग (1900 ई. से 1920 ई. तक)

- इस युग का नामकरण **महावीर प्रसाद द्विवेदी** के नाम पर किया गया है।
- इस युग में हिन्दी गद्य–पद्य दोनों ही काव्यों में खड़ी बोली का प्रयोग होने लग गया था, जिसके कारण आचार्य शुक्ल ने इस युग को ''हिन्दी काव्यधारा की नयी धारा'' एवं डॉ. नगेन्द्र ने इस युग को ''जागरण सुधार काल'' के नाम से पुकारा है।
- डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त ने इस युग को आदर्शवादी प्रबंध परम्परा काव्य के नाम से पुकारा है।
- इस युग के विकास में निम्न दो संस्थाओं का महत्वपूर्ण योगदान है –
  1. नागरी प्रचारिणी सभा – काशी (1893 ई.)
  2. सरस्वती पत्रिका

नागरी प्रचारिणी सभा, काशी

- इस संस्था की स्थापना का विचार सर्वप्रथम क्वीन्स कॉलेज, वाराणसी के 9वीं कक्षा के पढ़ने वाले निम्न तीन छात्रों के मन में उत्पन्न हुआ था –
  1. रामनारायण मिश्र
  2. श्याम सुंदर दास
  3. शिव कुमार सिंह
     (राम, श्याम, शिव)

  इन तीनों ने मिलकर 16 जुलाई, 1893 ई. को इस संस्था की स्थापना की।
  डॉ. राधाकृष्ण दास इस सभा के प्रथम अध्यक्ष बनाये गये थे।
  अपना निजी भवन बनने से पहले इस सभा की बैठकें काशी के सप्तसागर मौहल्ले में स्थित एक घुड़साल में हुआ करती थी।
  इस संस्था के द्वारा हिन्दी के विकास के लिए निम्न कार्य किये –
  1. हिन्दी के हस्तलिखित ग्रंथ की खोज का कार्य (1900 ई. से 1921 ई. तक)
  2. नागरी प्रचारिणी नामक त्रैमासिक पत्रिका का संपादन (1869 ई. से शुरू)
  नोट – यह पत्रिका एक संपादक मण्डल के द्वारा प्रकाशित की जाती थी। इस संपादक मण्डल में निम्न तीन विद्वान शामिल थे –
  (i) बाबू श्यामसुंदर दास
  (ii) चिन्तामणि घोष
  (iii) जगन्नाथ रत्नाकर
  ट्रिक – श्याम को जग की चिन्ता थी।
- हिन्दी साहित्य सम्मेलन **'प्रयाग'** की स्थापना – 1910 ई. में
  नोट – इस सम्मेलन की स्थापना के बाद हिन्दी साहित्य की समृद्धि का तो नागरिणी प्रचारिणी सभा ने अपने हाथों में, हिन्दी के प्रचार–प्रसार का कार्य इस सम्मेलन को सौंप दिया गया था।
  3. आर्यभाषा पुस्तकालय काशी की स्थापना – 1896 ई.
  नोट – यह भारत का हिन्दी भाषा का सबसे बड़ा पुस्तकालय है। इस पुस्तकालय का भवन ठाकुर गदाधर सिंह के द्वारा दान किया गया था।

4. **हिन्दी विश्वकोष ग्रंथ का संपादन**
   नोट – इस ग्रंथ का संपादन भारत सरकार के सहयोग से किया गया था। इसके अब–तक बारह भाग प्रकाशित हो चुके है।
5. **हिन्दी साहित्य का वृहद् इतिहास ग्रंथ का संपादन**
   नोट – आरम्भ में इस ग्रंथ को 18 खण्डों में प्रकाशित करने की योजना बनाई गयी, किन्तु किन्हीं कारणों से उनके दो खण्ड प्रकाशित नहीं हो सकें एवं अब तक इस ग्रंथ के 16 खण्ड प्रकाशित हुए हैं।
6. **हिन्दी शब्द सागर ग्रंथ का संपादन**
   यह हिन्दी भाषा का सबसे प्रारम्भिक एवं विस्तृत कोश माना जाता हैं। इस ग्रंथ के अब तक 10 खण्ड प्रकाशित हो चुके हैं।

सरस्वती पत्रिका

- इस पत्रिका के संपादन का विचार सर्वप्रथम चिन्तामणि घोष के मन में उत्पन्न हुआ था।
- इनके द्वारा निवेदन किये जाने पर नागरी प्रचारिणी सभा काशी के द्वारा 1900 ई. में इस पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया गया।
- अपने आरम्भिक एक वर्ष तक इस पत्रिका का संपादन एक संपादक मण्डल के द्वारा किया गया, जिसमें निम्न 5 विद्वान शामिल थे –
  1. बाबू श्यामसुंदर दास
  2. राधा कृष्णदास
  3. जगन्नाथदास रत्नाकर
  4. कार्तिक प्रसाद
  5. किशोरी लाल गोस्वामी
- 1901 ई. में बाबू सुंदर दास इस पत्रिका के प्रथम संपादक बनाये गये।
- महावीर प्रसाद द्विवेदी ने भी 1903 ई. से लेकर 1920 ई. तक इस पत्रिका का संपादन किया था।
- यह पत्रिका मासिक प्रकाशित होती थी।
- आचार्य शुक्ल ने इस पत्रिका को "20वीं शताब्दी के प्रारम्भिक काल का विश्वकोष" कहकर पुकारा हैं।

द्विवेदी युग के कवियों का विभाजन

द्विवेदी युग के कवियों को प्रमुखतः दो श्रेणियों में विभाजित किया गया हैं –
1. अनुशासन की धारा के कवि
2. स्वच्छन्दता की धारा के कवि

अनुशासन धारा के कवि

- द्विवेदी युग के जिन कवियों ने महावीर प्रसाद के नेतृत्व में रहकर उनके निर्देशानुसार लेखन कार्य किया है, वे अनुशासन की धारा के कवि अथवा द्विवेदी मण्डल के कवि वर्ग में शामिल किये जाते हैं।
- इस श्रेणी में प्रमुखतः निम्न कवि शामिल किये गये हैं –
  1. महावीर प्रसाद द्विवेदी
  2. मैथिली शरण गुप्त
  3. अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
  4. रामचरित उपाध्याय

स्वच्छन्दता की धारा के कवि

- इसमें द्विवेदी युग के जिन कवियों ने महावीर प्रसाद द्विवेदी के नेतृत्व को स्वीकार नहीं करके अपनी स्वच्छन्द मनोवृत्ति के आधार पर लेखन कार्य किया हैं।

- इस श्रेणी में प्रमुखतः निम्न कवि शामिल है –
  1. रामनरेश त्रिपाठी
  2. मुकुटधर पाण्डेय
  3. लाला भगवान दीन
  4. नाथूराम शर्मा 'शंकर'
  5. पं. गयाप्रसाद शुक्ल 'स्नेही'
  6. रूपनारायण पाण्डेय
  7. राय देवी प्रसाद 'पूर्ण'

द्विवेदी युग के प्रमुख कवि

1. महावीर प्रसाद द्विवेदी

- जन्म – 1864 ई.
- मृत्यु – 1938 ई.
- जन्म स्थान – ग्राम–दौलतपुर, जिला–रायबरेली, उत्तर प्रदेश

रचनाएँ

1. काव्य मंजूषा
2. सुमन
3. कान्य कुब्ज
4. अबला विलाप (मौलिक पद्य)
5. कविता कलाप
6. महिला मोद
7. नागरी तेरी यह दशा
8. सम्पत्ति शास्त्र (अर्थशास्त्र से संबंधित)
9. गंगालहरी
10. ऋतुतरंगिणी
11. कुमारसंभव सार (अनूदित)

प्रसिद्ध लेख

- कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता 1908 ई. में सरस्वती पत्रिका में छपा।
- क्या हिन्दी नाम की कोई भाषा ही नही हैं – 1913 ई. में सरस्वती पत्रिका में छापा।
- आर्य समाज का कोप – 1914 ई. में सरस्वती पत्रिका में छापा।

अन्य तथ्य

- **ये अपने आरम्भिक जीवन में भुजंग–भूषण भट्टाचार्य के गुप्त नाम से लेखन कार्य किया करते थे।**
- ये हिन्दी भाषा को व्याकरण सम्मत रूप प्रदान करने वाले विद्वान थे।
- महावीर प्रसाद ने साहित्य को ज्ञान की राशि का संचित कोष कहकर पुकारा है।
- ये आधुनिक काल में हिन्दी गद्य व पद्य दोनों की भाषा के परिमार्जन कर्ता भी माने जाते हैं।
- **इन्होंने 1903 ई. से लेकर 1920 ई. तक सरस्वती पत्रिका का संपादन किया।**
- **संपत्ति शास्त्र इनकी अर्थशास्त्र से संबंधित रचना मानी जाती है।**
- इन्होंने संस्कृत भाषा में रचित निम्न रचनाओं का हिन्दी अनुवाद किया –
  1. मेघदूतसार
  2. ऋतु तरंगिणी
  3. गंगालहरी

- इनके द्वारा रचित संपूर्ण रचनाओं को महावीर प्रसाद द्विवेदी रचनावली के नाम से 15 खण्डों में संकलित किया गया हैं।

2. मैथिलीशरण गुप्त

- जन्म – 1886 ई.
- मृत्यु – 1964 ई.
- जन्म स्थान – ग्राम चिरगाँव, जिला–झाँसी (उत्तर प्रदेश)
- गुरु का नाम – महावीर प्रसाद द्विवेदी
- मूल नाम – मिथिलाधिप नंदिनीशरण

रचनाएँ

1. रंग में भंग – 1909 ई.
2. जयद्रथ वध – 1910 ई.
3. भारत–भारती – 1912 ई.
4. किसान – 1917 ई.
5. पंचवटी – 1925 ई.
6. त्रिपथगा – 1928 ई.
7. झंकार – 1929 ई.
8. साकेत – 1931 ई.
9. यशोधरा – 1933 ई.
10. द्वापर – 1936 ई.
11. नहुष – 1940 ई.
12. कुणालगीत – 1942 ई.
13. काबा और कर्बला – 1942 ई.
14. जयभारत – 1952 ई.
15. विष्णुप्रिया – 1957 ई.

अनुदित काव्य

1. मेघनाथ वध
2. वृत्र–संहार
3. प्लासी का युद्ध

विशेष – इनकी सर्वप्रथम कविता 1905 ई. में **हेमन्त शीर्षक** से सरस्वती पत्रिका में प्रकाशित हुई थी।

- इनकी सर्वप्रथम रचना 1909 ई. में "रंग में भंग" नाम से प्रकाशित हुई। इस रचना में इन्होंने चित्तौड़ एवं बूँदी की राजपूती आन का वर्णन किया हैं।
- इनकी सर्वप्रथम प्रसिद्ध रचना 1912 ई. में प्रकाशित 'भारत–भारती' मानी जाती है, इसमें इन्होंने अंग्रेज सरकार का विरोध किया था अर्थात् जिसके कारण इनको जेल भी जाना पड़ा था। इसी रचना के लेखन के कारण 1936 ई. में काशी में आयोजित एक सम्मेलन में **महात्मा गाँधी ने इनको राष्ट्रकवि की उपाधि प्रदान की थी।**
- इनकी सर्वाधिक प्रसिद्ध रचना साकेत मानी जाती हैं।

साकेत (1931)

- यह रचना इन्होंने निम्न दो लेखों से प्रभावित होकर लिखी थी –
  1. कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता (महावीर द्विवेदी)
  2. काव्य की उपेक्षिताएँ (रवीन्द्रनाथ टैगोर)
- यह रचना इन्होंने 1916 ई. में लिखना आरम्भिक कर दी थी, परन्तु इसका प्रकाशन 1931 ई. में हुआ था। इस प्रकार इसकी रचना में कुल 15 वर्ष का समय लगा था।

- इस रचना के लेखन की योजना या रूपरेखा इनके मित्र **छोटेलाल बार्हस्पत्य** के द्वारा तैयार की गयी थी।
- महाकाव्य श्रेणी की इस रचना को **12 सर्गों** में विभाजित किया हैं।
- रामचरित मानस के बाद यह हिन्दी साहित्य की दूसरी बड़ी रामकाव्य रचना मानी जाती है।
- इस रचना में **लक्ष्मण की पत्नी उर्मिला के चरित्र** को उभारा गया है।
- इस रचना का 9वाँ सर्ग सबसे बड़ा सर्ग माना जाता है, इसी में उर्मिला के वियोग का वर्णन किया गया है।
- इस रचना के लिए इनको **मंगला प्रसाद पारितोषिक पुरस्कार** प्राप्त हुआ था।
- आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी ने इस रचना को आधुनिक हिन्दी का **युग प्रवर्तक महाकाव्य** कहकर पुकारा है।
- गुप्त जी अपने आरम्भिक जीवन में बंगाल से प्रकाशित होने वाले वैश्योपकारक केन्द्र के **ब्रज भाषा में रसिकेन्द्र** नाम से लिखते थे।
- इन्होंने बांग्ला भाषा के प्रसिद्ध लेखक **माइकेल मधुसूदन** की रचना का हिन्दी भाषा में **मधुप उपनाम** से अनुवाद कार्य किया था।
- गुप्त जी ने कुल 40 रचनाएँ लिखी हैं, जिनमें से 19 रचनाएँ खण्डकाव्य श्रेणी की रचनाएँ हैं।
- अपनी रचनाओं में इन्होंने **हरी गीतिका छंद** का सर्वाधिक प्रयोग किया है।
- डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त ने इनको "आधुनिक युग का तुलसीदास" कहकर पुकारा हैं।
- डॉ. बच्चन सिंह के अनुसार ये धर्म में विशिष्टाद्वैतवादी विचारों, गाँधीवादी एवं साहित्य में अभिधावादी कवि माने गये हैं।
- भारत सरकार के द्वारा इनको पद्म भूषण (1954 ई.) से सम्मानित किया था।
- **हिन्दी साहित्य में इनको दद्दा के नाम से भी जाना जाता हैं।**

3. अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

- ➢ जन्म – 1865 ई.
- ➢ मृत्यु – 1947 ई.
- ➢ जन्म स्थान – ग्राम–निजामाबाद, जिला–आजमगढ़ (उत्तर प्रदेश)

रचनाएँ

○ इनके द्वारा रचित रचनाओं को विषय–वस्तु की दृष्टि से तीन भागों में बाँटा गया हैं –

कृष्ण चरित संबंधी रचनाएँ

1. कृष्ण शतक – 1882 ई.
2. प्रद्युम्न विजय – 1893 ई.
3. रूक्मिणी परिणय – 1894 ई.
4. प्रिय–प्रवास – 1914 ई. (17 सर्ग, खड़ी बोली, महाकाव्य)

रामचरित संबंधी रचना

○ वैदेही वनवास – 1940 ई. (18 सर्ग)

शृंगारिक रचनाएँ

1. रसिक रहस्य – 1899 ई.
2. प्रेमाम्बुवारिधि – 1900 ई.
3. प्रेम–प्रपंच – 1900 ई.
4. प्रेमाम्बुप्रवाह – 1901 ई.
5. प्रेमाम्बुप्रश्रवण – 1901 ई.
6. चुभते–चौपदे – 1924 ई., NCERT – 1932 ई.
7. चौखे–चौपदे – 1924 ई., NCERT – 1932 ई.

8. पद्य–प्रसून – 1925 ई.
9. बोल चाल – 1928 ई.
10. पारिजात – 1937 ई.
11. रस कलश – 1931 ई. – ब्रजभाषा

विशेष – प्रिय प्रवास इनकी सर्वाधिक प्रसिद्ध रचना है। महाकाव्य श्रेणी की इस रचना को **17 सर्गों** में विभाजित किया हैं।

- आचार्य शुक्ल के अनुसार यह खड़ी बोली की सर्वप्रथम महाकाव्य रचना हैं।
- इस रचना में राधा को लोक नायिका, लोक सेविका, लोक शिक्षिका के रूप में स्थापित किया गया हैं।
- **नोट**
  - ➢ आधुनिक काल का तुलसी – मैथिलीशरण गुप्त
  - ➢ आधुनिक काल का सूरदास – अयोध्यासिंह उपाध्याय "हरिऔध"
  - ➢ आधुनिक काल का कबीर – नागार्जुन
- इस रचना के चतुर्थ सर्ग में राधा के विरह का मार्मिक वर्णन है।
- इस रचना के लिए इनको **मंगला प्रसाद पारितोषिक पुरस्कार** प्राप्त हुआ था।
- **इस रचना के लेखन के कारण डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त ने इनको "आधुनिक काल का सूरदास" कहकर पुकारा हैं।**
- इस रचना में शृंगार रस की प्रधानता मानी जाती है।

वैदेही वनवास (1940)

- यह इनकी दूसरी प्रसिद्ध रचना है।
- इस रचना में राम के द्वारा गर्भवती सीता का परित्याग किये जाने की घटना का वर्णन किया गया है।
- इस रचना को 18 सर्गों में विभाजित किया गया है।
- इनकी लगभग सभी रचनाओं में खड़ी बोली का प्रयोग किया गया है, परन्तु इनकी रस कलश (1931) रचना में ब्रज भाषा का प्रयोग किया गया है।
- अपने अपूर्व साहित्य साधना के कारण हिन्दी साहित्य में इनको "कवि सम्राट" भी कहा जाता हैं।
- इनकी रस कलश रचना रीति काव्य से संबंधित रचना भी मानी जाती हैं। इस रचना में इन्होंने रस, रस स्वरूप, नायिका भेद, ऋतु विवेचन किया है।
- इनकी चुभते चौपदे, चौखे चौपदे, बोलचाल रचनाओं में मुहावरेदार भाषा शैली का प्रयोग किया गया हैं।

4. पं. श्रीधर पाठक

- ➢ जन्म – 1859 ई.
- ➢ मृत्यु – 1928 ई.
- ➢ जन्मस्थान – ग्राम–जोधरी, आगरा (उत्तर प्रदेश)

अनुदित रचनाएँ

- **एकान्तवासी योगी–1886 ई.**
  नोट – इस रचना में अंग्रेजी साहित्य के गोल्ड स्मिथ द्वारा रचित "हरमिट" रचना का हिन्दी अनुवाद किया गया हैं।
  - ➢ आचार्य शुक्ल के अनुसार यह रचना आधुनिक खड़ी बोली की सर्वप्रथम रचना भी मानी गयी हैं।
- **ऊजड़ ग्राम–1889 ई.**
  - ➢ इस रचना में गोल्ड स्मिथ द्वारा रचित–**डेजर्टिड विलिज** रचना का हिन्दी अनुवाद किया गया है। यह रचना ब्रज भाषा में लिखी गयी है।

- **श्रान्त पथिक–1902 ई.**
  - इस रचना में गोल्ड स्मिथ द्वारा रचित ट्रेवलर रचना का हिन्दी अनुवाद किया गया है।
  - यह रचना खड़ी बोली में लिखी है।
  - इस रचना में **रोला** छन्द का प्रयोग किया गया है।

मौलिक रचनाएँ

1. मनोविनोद – 1882 ई.
2. जगत सच्चाई सार – 1887 ई.
3. काश्मीर सुषमा – 1904 ई.
4. आराध्य शोकांजलि – 1906 ई.
5. जॉर्ज वन्दना – 1912 ई.
6. गोखले प्रशस्ति – 1913 ई.
7. देहरादून – 1915 ई.
8. गोपिका गीत – 1916 ई.
9. भारत गीत – 1928 ई.

अन्य प्रसिद्ध रचनाएँ

1. भारतोत्थान
2. भारत प्रशंसा
3. स्वर्ग वीणा
4. बाल विधवा
5. गुनवंत हेमन्त

विशेष

- **आचार्य शुक्ल के अनुसार ये आधुनिक खड़ी बोली के सर्वप्रथम कवि माने गये है।**
- इनकी रचनाओं में प्रकृति का अत्यधिक सुन्दर वर्णन किया गया है, जिसके कारण इसको "प्रकृति का उपासक कवि" भी कहा जाता है।
- हिन्दी साहित्य में ये गाँव को काव्य का विषय बनाने वाले कवि थे।
- इनकी लगभग सभी रचनाओं में खड़ी बोली का प्रयोग किया गया है, परन्तु मनोविनोद, ऊजड़ग्राम, काश्मीर सुषमा रचनाओं में ब्रज भाषा का प्रयोग भी किया गया है।

5. रामनरेश त्रिपाठी

- जन्म – 1881 ई.
- मृत्यु – 1962 ई.

रचनाएँ

- इनके द्वारा रचित रचनाओं को काव्य स्वरूप के आधार पर दो श्रेणियों में बाँटा गया हैं –

प्रबंधात्मक काव्य रचनाएँ

1. **मिलन (1917 ई.)**
   इस रचना में विदेशी शासन से भारत को आजाद करवाये जाने का आह्वान किया गया हैं।
2. **पथिक (1920 ई.)**
   इस रचना में भारत को औपनिवेशवाद के एकतंत्र से मुक्ति दिलाये जाने का आह्वान किया गया है।
3. **स्वप्न (1929 ई.)**
   इस रचना में विदेशी आक्रमणकारियों से भारत की सुरक्षा का आह्वान किया है। इसी रचना में उत्तराखण्ड एवं कश्मीर क्षेत्र की प्राकृतिक सुन्दरता का वर्णन किया गया हैं।

फुटकल काव्य रचना

1. मानसी (1927 ई.)

इस रचना में इनके द्वारा रचित देशभक्ति, प्रकृति वर्णन, नीति संबंधी छोटी–छोटी कविताओं का एक जगह संकलन किया गया है।

विशेष

- इनके द्वारा रचित कविताओं को "कविता कौमुदी" के नाम से भी आठ भागों में संकलित किया हैं। इस संकलन में इनके द्वारा रचित हिन्दी, संस्कृत, उर्दू, बांग्ला भाषाओं की कविताओं का संकलन है।
- इन्होंने पर्याप्त भ्रमण करके अपने परिश्रम से विविध क्षेत्रों के लोकगीतों का संकलन भी किया था।
- ये हिन्दी में **बाल साहित्य के प्रवर्तक** भी माने जाते है।
- बच्चों के मनोरंजन के लिए इन्होंने **वानर** नामक एक बाल पत्रिका का संपादन भी किया था।
- "हे प्रभो! आनंद दाता ज्ञान हमको दीजिए" यह प्रसिद्ध गीत भी रामनरेश त्रिपाठी ने लिखा था।
- फतेहपुर, शेखावटी (सीकर) के नेवटिया परिवार से इनका संबंध था।

6. नाथूराम शर्मा 'शंकर'

- ➢ जन्म – 1859 ई.
- ➢ मृत्यु – 1932 ई.

रचनाएँ

1. शंकर सर्वस्व
2. शंकर सरोज
3. अनुराग रत्न
4. गर्भरण्डारहस्य

विशेष

- **गर्भरण्डारहस्य** इनके द्वारा रचित **प्रबंधात्मक** श्रेणी की हास्य व्यंग्य प्रधान रचना मानी जाती है।
- इस रचना में विधवाओं की दुर्दशा एवं देवालयों में किये जाने वाले धार्मिक दुष्कर्मों पर व्यंग्य किया गया है।
- **हिन्दी साहित्य जगत में इनको भारतेन्दु, प्रज्ञेन्दु, साहित्य सुधाकर, कविता कामिनीकांत के नाम से भी पुकारा जाता है।**
- इनकी आरम्भिक कविताएँ ब्राह्मण एवं सरस्वती पत्रिकाओं में प्रकाशित हुआ करती थी।
- इनकी सर्वप्रथम कविता मात्र 13 वर्ष की अल्पायु में लिखी गयी थी।

7. गया प्रसाद शुक्ल 'स्नेही'

- ➢ जन्म – 1883 ई.
- ➢ मृत्यु – 1972 ई.

रचनाएँ

1. कृषक क्रन्दन
2. प्रेम पच्चीसी
3. राष्ट्रीय वीणा
4. त्रिशूल तरंग
5. करूण कादम्बिनी
6. कुसुमांजलि
7. राष्ट्रीय मंत्र
8. कला में त्रिशूल
9. संजीवनी

- **हिन्दी साहित्य में इन्होंने त्रिशूल एवं स्नेही उपनामों से लेखन कार्य किया हैं।**
- अपनी श्रृंगार रस से संबंधित कविताओं में इन्होंने स्नेही उपनाम का एवं राष्ट्रभक्ति से संबंधित कविताओं में त्रिशूल उपनाम का प्रयोग किया है।
- अपनी कविताओं के प्रकाशन के लिए इन्होंने **सुकवि** नामक एक पत्रिका का संपादन किया था।

8. रायदेवी प्रसाद "पूर्ण" (1868 – 1915 ई.)
रचनाएँ
1. धाराधरधावन
2. स्वदेशी कुण्डल
3. मृत्युंजय (1904)
4. राम–रावण विरोध (1906)
5. अमलतास
6. वसंत वियोग (1912)
7. नये सन् का स्वागत (1910 ई. की बात)
8. नये संवत्सर का स्वागत (1967 ई. की बात)

विशेष
- इनकी **धाराधरधावन** रचना में संस्कृत के कालिदास द्वारा रचित मेघदूत रचना का पद्यबद्ध हिन्दी अनुवाद किया गया है।
- इनकी स्वदेशी कुण्डल रचना में इनके द्वारा रचित **देशभक्तिपूर्ण 52 कुण्डलियाँ छन्दों का संग्रह** किया गया है।
- वसंत वियोग इनके द्वारा रचित एक लंबी कविता मानी जाती है। इस कविता में इन्होंने "भारत भूमि को एक उद्यान" के रूप में कल्पित किया हैं।
- इनकी रचनाओं में प्रकृति का सुंदर वर्णन किया हैं। प्रकृति वर्णन में ये रीतिकालीन कवि सेनापति के समकक्ष कवि माने जाते हैं।

9. लाला भगवान दीन (1866 – 1930 ई.)
रचनाएँ
1. वीर क्षत्राणी
2. वीर बालक
3. वीर पंचरत्न
4. नवीन बीन

विशेष
- अपनी रचनाओं में इन्होंने हिन्दी भाषा के साथ–साथ उर्दू, फारसी भाषा के शब्दों का प्रयोग भी किया हैं।
- ये उर्दू के प्रमुख छन्द **उर्दू ब्रहों** की रचना करने वाले कवि माने जाते हैं।
- इन्होंने **लक्ष्मी** नामक एक **पत्रिका** का संपादन भी किया था।
- इन्होंने अपनी अधिकतर रचनाएँ **दीन** उपनाम से लिखी हैं।
  - ➢ इन्होंने हिन्दी की निम्न रचनाओं पर टिकाएँ भी लिखी हैं –
    1. कवितावली – तुलसीदास
    2. दोहावली – तुलसीदास
    3. कविप्रिया – केशवदास
    4. रामचन्द्रिका – केशवदास
    5. बिहारी सतसई – बिहारी